अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

वागड़ में शिक्षा के लिए स्वतंत्रता पूर्व भील शहादतें - नाना भाई और वीर बाला कालीबाई

डॉ . नारायण लाल पारगी,
शोध पर्यवेक्षक

श्री कन्हैया लाल खाँट,
शोधार्थी
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय
बांसवाड़ा

सार

वागड़ क्षेत्र (डूंगरपुर और बांसवाड़ा) का ऐतिहासिक परिदृश्य सामंती शासन और भील समुदाय के संघर्षों से चिह्नित है। डूंगरपुर रियासत, जो 1282 में रावल वीर सिंह द्वारा स्थापित हुई, में सामंती अत्याचार और शिक्षा का अभाव प्रबल था। गोविंद गुरु और भोगीलाल पंड्या ने भगत आंदोलन और वागड़ सेवा मंदिर के माध्यम से भील समुदाय में शिक्षा और जागरूकता का प्रसार किया। 1944 में स्थापित डूंगरपुर प्रजामंडल ने रियासत में उत्तरदायी शासन की स्थापना, नागरिक अधिकारों की रक्षा,सामंती शोषण, बेगार प्रथा और करों के खिलाफ आंदोलन चलाया, साथ ही पालों(गांवों का समूह को कहा जाता है।) में नागरिकों को जागरूक करने के लिए पाठशालाएं स्थापित कीं। इनमें प्रमुख पाठशालाएं -रास्तापाल और पुनावाड़ा थी। रास्तापाल हत्याकांड (19 जून 1947) में शिक्षक नाना भाई खांट और शिष्या कालीबाई की शहादत ने शिक्षा के लिए बलिदान का प्रतीक स्थापित किया। प्रजामंडल की गतिविधियों ने साक्षरता, सामाजिक सुधार और प्रजातांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप डूंगरपुर महारावल लक्ष्मण सिंह ने दिसंबर 1947 में राज्य प्रबंध कारिणी सभा की स्थापना हुई। इस आंदोलन ने वागड़ में शिक्षा और स्वतंत्रता की नींव रखी।

की वर्ड :-

वागड़, रियासत, प्रजामंडल, पूनावाडा, रास्ता पाल, पाठशाला, वागड़ सेवा मंदिर, राजस्थान सेवा संघ

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

प्रस्तावना

वागड़ क्षेत्र, जो वर्तमान राजस्थान और गुजरात के सीमावर्ती आदिवासी बहुल क्षेत्र में स्थित है, स्वतंत्रता से पूर्व सामंती शासन और औपनिवेशिक दमन के खिलाफ जनजातीय समुदायों, विशेषकर भीलों, के संघर्ष का गवाह रहा है। इस क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार के लिए भील समुदाय ने न केवल सामाजिक जागरूकता के लिए बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। 19 जून 1947 को डूंगरपुर रियासत के रास्तापाल गांव में नाना भाई खांट, सेंगा भाई और वीर बाला कालीबाई की शहादत शिक्षा के लिए उनके अटूट समर्पण और सामंती अत्याचारों के खिलाफ उनके साहस का प्रतीक है। यह शोध पत्र वागड़ क्षेत्र में शिक्षा के लिए भील समुदाय की शहादतों, विशेषकर नाना भाई और कालीबाई के बलिदान, को ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में विश्लेषित करता है।

1. वागड़ क्षेत्र का ऐतिहासिक परिदृश्य

वागड़ क्षेत्र, जो डूंगरपुर और बांसवाड़ा रियासतों को समेटे हुए है, इसमें डूंगरपुर रियासत, जिसकी स्थापना 1282 ई. में रावल वीर सिंह ने की, मेवाड़ के गुहिलोत वंश की वरिष्ठ शाखा से संबंधित थी। रियासतों की स्थापना से पहले स्थानीय भील राजाओं या सरदारों द्वारा शासन किया जाता था। इनमें डूंगरिया भील का उल्लेख मिलता है। इस क्षेत्र में भील जनजातियों का प्रमुख निवास स्थल रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व यह क्षेत्र सामंती शासन व्यवस्था और ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के अधीन था। डूंगरपुर रियासत में महारावल लक्ष्मण सिंह (1934-1948) के शासनकाल में सामंती अत्याचार चरम पर थे। शिक्षा का अभाव, बेगार प्रथा, और सामाजिक भेदभाव ने भील समुदाय को संगठित विद्रोह की ओर प्रेरित किया। जिससे आगे सामंती प्रशासन और भीलों में संघर्ष की परिस्थितियों का निर्माण हुआ।वागड़ क्षेत्र में सामंती शासन ने दमनकारी नीतियों ने भील समुदाय को शिक्षा और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।[1]

भील समुदाय में शिक्षा के प्रसार का श्रेय गोविंद गुरु और भोगीलाल पंड्या को जाता है। गोविंद गुरु (1858-1931) ने 'भगत आंदोलन' के माध्यम से भीलों में सामाजिक और धार्मिक सुधार लाने का प्रयास किया। लेकिन ब्रिटिश शासकों और देशी रजवाड़ों ने भगत आंदोलन का दमन किया गया। अंग्रेजी सैनिकों ने गोविंद गुरु के नेतृत्व में17 नवंबर 1913 में मानगढ़ पहाड़ी पर इकट्ठे भीलों पर तोपों से गोलाबारी की गई। जिससे 1500 से अधिक आदिवासियों की मृत्यु हुईं।इसे मानगढ़ हत्याकांड"कहा जाता है।गोविंद गुरु ने वागड़ में शिक्षा और जागरूकता के लिए भगत आंदोलन को एक शक्तिशाली माध्यम बनाया।[2]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

उन्होंने शिक्षा को सामाजिक उत्थान का आधार माना और वागड़ क्षेत्र में स्कूलों की स्थापना की। भोगीलाल पंड्या, जिन्हें 'वागड़ का गांधी' कहा जाता है, ने 1919 में आदिवासी छात्रावास और 1935 में वागड़ सेवा मंदिर की स्थापना की।डूंगरपुर सेवा संघ ने भील बच्चों के लिए पाठशालाएं स्थापित कीं, जिनमें रास्ता पाल, पूनावाड़ा पाठशाला प्रमुख थी। डूंगरपुर रियासत के अभिलेखों में वागड़ सेवा मंदिर और डूंगरपुर सेवा संघ की गतिविधियों का उल्लेख है, जिसमें शिक्षा के लिए सामुदायिक प्रयासों का विवरण शामिल है। वागड़ सेवा मंदिर ने भील समुदाय में शिक्षा के प्रसार को एक संगठित रूप प्रदान किया।

डूंगरपुर प्रजामंडल की स्थापना 1944 में भोगीलाल पंड्या, हरिदेव जोशी और शिवलाल कोटडिया के नेतृत्व में हुई। इसका प्रमुख उद्देश्य राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना, नागरिक अधिकारों की रक्षा करना सामंती अत्याचारों, जैसे बेगार प्रथा और करों, का विरोध करना, शिक्षा का प्रसार करना, और उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था। प्रजामंडल ने शिक्षा के प्रसार और सामंती अत्याचारों के खिलाफ कई सभाओं का आयोजन किया। 1943 में राजस्थान सेवा संघ और वागड़ सेवा मंदिर ने भील समुदाय में शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए कार्य किया।प्रजामंडल ने भील समुदाय को सामाजिक और शैक्षिक जागरूकता के लिए संगठित किया। डूंगरपुर रियासत के अभिलेखों में प्रजामंडल की सभाओं और गतिविधियों को "रियासत विरोधी" करार दिया गया, जो इसकी प्रभावशीलता को दर्शाता है। प्रजामंडल आंदोलन ने वागड़ में शिक्षा और स्वतंत्रता की चेतना को प्रज्वलित किया।[3]

2. प्रजामंडल की शिक्षा प्रसार की गतिविधियाँ

डूंगरपुर प्रजामंडल ने शिक्षा को सामाजिक उत्थान और स्वतंत्रता संग्राम का आधार माना। प्रजामंडल ने डूंगरपुर सेवा संघ के सहयोग से रास्तापाल, पूनावाड़ा, और अन्य गांवों में पाठशालाएं स्थापित कीं। ये पाठशालाएं भील बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करती थीं। रास्तापाल पाठशाला, जहां नाना भाई खांट और कालीबाई ने बलिदान दिया, और पूनावाड़ा पाठशाला, जहां शिवराम रोत शिक्षक थे, इसके प्रमुख उदाहरण हैं।डूंगरपुर रियासत के अभिलेखों में इन पाठशालाओं को "अनधिकृत" करार दिया गया, जो सामंती शासन की शिक्षा विरोधी नीति को दर्शाता है।प्रजामंडल ने डूंगरपुर में सामंती शासन के खिलाफ एक संगठित जनांदोलन की शुरुआत की।

प्रजामंडल ने नाना भाई खांट, सेंगा भाई, और शिवराम रोत जैसे समर्पित शिक्षकों को नियुक्त किया। ये शिक्षक न केवल पढ़ाते थे, बल्कि सामाजिक जागरूकता भी फैलाते थे। "नवज्योति" (मई 1946) ने प्रजामंडल के शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों का उल्लेख किया, जिसमें लिखा गया कि "शिक्षक भील

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

समुदाय में स्वतंत्रता और शिक्षा की चेतना जागृत कर रहे प्रजामंडल ने गांव-गांव में सभाएं आयोजित कीं, जिनमें शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया गया। भोगीलाल पंड्या ने इन सभाओं में भील समुदाय को शिक्षा के माध्यम से सामंती शोषण से मुक्ति का संदेश दिया। "राजस्थान पत्रिका" (अप्रैल 1947) ने इन सभाओं को "शिक्षा क्रांति का प्रारंभ" किया।

प्रजामंडल ने वागड़ सेवा मंदिर (1935 में स्थापित) और राजस्थान सेवा संघ (1943 में सक्रिय) के साथ मिलकर शिक्षा प्रसार के लिए कार्य किया। वागड़ सेवा मंदिर ने आदिवासी छात्रावास और पाठशालाएं संचालित कीं, जिन्हें प्रजामंडल ने संगठित समर्थन प्रदान किया। आदिवासी छात्रावास में डूंगरपुर रियासत के विभिन्न गांवों के विधार्थियों को पढ़ने के लिए रखा गया,जिसका संरक्षण महारावल द्वारा किया गया था। प्रजामंडल की पाठशालाएं भील समुदाय में शिक्षा और जागरूकता का प्रतीक बनीं।[4]

3. सामंती शासन का दमन और चुनौतियाँ

महारावल लक्ष्मण सिंह के नेतृत्व में डूंगरपुर रियासत ने प्रजामंडल की शिक्षा प्रसार की गतिविधियों को दबाने के लिए कठोर कदम उठाए।प्रजामंडल द्वारा संचालित पाठशालाओं को बंद करने के आदेश जारी किए गए। जिससे संचालित पाठशालाओं को शिक्षकों ने बन्द करने से मना किया, और कहा कि जिन्होंने पाठशालाओं को खोला है उनके आदेशों की पालना की जायेगी। ब्रिटिश गुलाम शासकों के आदेश की पालना करने से मना कर दिया। इसके प्रत्युत्तर में महारावल के सैनिकों ने पुनावाड़ा पाठशाला के शिक्षक शिवराम रोत को मई 1947 में सैनिकों द्वारा अपहरण किया गया, उन्हें छुड़वाने के लिए प्रजामण्डल के कार्यकर्ता- भोगीलाल पंड्या, शिवराम कोटडिया और अन्य भील लोगों ने विरोध किया और शिक्षक शिवराम रोत अपहरण से मुक्त कराया, लेकिन सभी प्रजामण्डलोश के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। "नवज्योति" (जून 1947) ने इन गिरफ्तारियों को "शिक्षा के प्रसार को रोकने का षड्यंत्र" बताया। सामंती शासन की क्रूरता ने प्रजामंडल के शिक्षा प्रसार के प्रयासों को और दृढ़ किया।[5]

रास्तापाल हत्याकांड :

ब्रिटिश भारत से भारत की स्वतंत्रता की घोषणा हो चुकी थी, और मध्य भारत के डूंगरपुर देशी रियासत में शिक्षा को रोकने के लिए प्रयास किए जा रहे थे, बहुसंख्यक भील आदिवासी जो पालों में बसता है,वह शिक्षित और जागरूक हो जाएगा और प्रजा मण्डल आन्दोलन से जुड़कर उत्तर दायी शासन की मांग तीव्र होगी। महारावल के आदेश पर मजिस्ट्रेट ने पाठशालाओं को बन्द करने अभियान शुरू किया। स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर एक ऐसी ही घटना 19 जून 1947 को रास्तापाल पाल में डूंगरपुर सेवा संघ

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

द्वारा संचालित पाठशाला को बंद करने मजिस्ट्रेट और सैनिक सुप्रीटेंडेंट पहुंचे। पाठशाला के हेडमास्टर नाना भाई खॉट और शिक्षक सेंगा भाई भील को बन्द करने का हुकुम दिया। उन दोनों ने आदेश की पालना करने से इंकार कर दिया और कहा कि हमारे मार्गदर्शक भोगीलाल पंड्या का आदेश मिलेगा तो ही पाठशाला बन्द की जाएगी।

पाठशाला की चाबी देने से इनकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप सैनिकों और ठाकुरों ने उन पर अमानवीय यातनाएं दीं। नाना भाई को बंदूकों की कुंदों से इतना मारा गया कि उनकी वही मृत्यु हो गई। शिक्षक सेंगा भाई को घायलावस्था में ट्रक से बांधकर घसीटते हुए ले जाते देखा। इस क्रूरता को देखकर उसी पाठशाला की 13 वर्षीय छात्रा कालीबाई, वहां एकत्रित भीड़ को चीरते हुई । वह ट्रक की ओर बढ़ी और पीछे -पीछे चिल्लाते रही कि "मेरे गुरूजी को कहां ले जा रहे हों ?" वह ट्रक के पीछे दौड़ती चली गई। ट्रक में बैठे सैनिक अधिकारियों ने कालीबाई को दूर हो जाने को कहा था। परन्तु कालीबाई ने उनकी एक ना सुनी। और ट्रक को थोड़ा रूकते देखा तो उसने दौड़कर शिक्षक सेंगा भाई की हाथों में बंधीं रस्सी को "दांतली" (लोहे का दांतेड़ा,जो घास,फसल कटाई में प्रयोग होता है।) से ट्रक की रस्सी काट दी, और सेंगा भाई को बचा लिया।

जिसके जवाब में मजिस्ट्रेट और सैनिकों ने उस पर गोलियां चलाई । जिससे कालीबाई लहूलुहान होकर घायल होकर गिर पड़ी और इस नृशंस गोली काण्ड में सोहन भील, लाली बाई, मांगी बाई, नवला बाई, होमली बाई, नानी बाई सहित कई महिलाएं हिलाएं घायल हो गईं। इस गोलीकांड की सूचना भीलों ने अपने पारम्परिक वाद्ययंत्र (सूचना का माध्यम) मारू ढोल बजना शुरू हुआ। (यह ढोल अकेला बजाया जाता है, जिससे भीलों पर खतरा होने पर ही बजाया जाता है।) गांवों की पालों के लोग बड़ी संख्या में इकट्ठे हो गए, जिससे सैनिक घटना स्थल से नौ दो ग्यारह हो गये। शहीद नाना भाई,घायल कालीबाई बाई,सेंगा भाई और अन्य घायलों को लोग अपने कन्धों पर लेकर डूंगरपुर अस्पताल पहुंचे, लेकिन वहां 21जून को कालीबाई की मृत्यु हो गई,सेंगा भाई और अन्य घायलों को बचा लिया गया। 21 जून 1947 को विशाल जुलूस के साथ शहीद नाना भाई और कालीबाई को विशाल शव यात्रा में लोगों ने नम आंखों से गैप सागर की पाल दाह संस्कार किया गया । इस घटनाक्रम के बाद महारावल लक्ष्मण सिंह ने पूर्व में गिरफ्तार प्रजामण्डल के सभी कार्यकर्ताओं को रिहा किया गया।रास्तापाल हत्याकांड ने वागड़ में शिक्षा के लिए भील समुदाय के बलिदान को अमर कर दिया।[6]

नाना भाई खांट एक सत्यनिष्ठ भील नेता थे, जिन्होंने शिक्षा के प्रसार के लिए गांव-गांव में जागरूकता फैलाई। सेंगा भाई ने शिक्षक के रूप में भील बच्चों को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

निभाई। कालीबाई, मात्र 13 वर्ष की आयु में, अपने शिक्षक को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। उनकी शहादत ने वागड़ क्षेत्र में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत वर्ष में स्वतंत्रता और शिक्षा के लिए संघर्ष को नई दिशा दी।ऐसी बहादुर, साहसी समर्पित, आज्ञाकारी वीरांगना कालीबाई भील थी। कालीबाई की शहादत ने भील समुदाय में नारी शक्ति और शिक्षा के प्रति समर्पण को दर्शाया।[7]

डूंगरपुर रियासत में दिवान मजिस्ट्रेट और सुप्रिडेंट पुलिस महकमा सामंती शासन के प्रमुख अंग थे। रास्तापाल गांव के ठाकुर ने महारावल के आदेशों का पालन करते हुए पाठशाला को बंद करने का प्रयास किया। पुलिस ने अमानवीय यातनाओं का सहारा लिया, जिसमें ढोल और दांतली का उपयोग शामिल था। यह घटना सामंती शासन की क्रूरता का प्रतीक बन गई। सामंती शासन की क्रूरता ने वागड़ में जनजागरूकता को और बढ़ाया।[8]

"नवज्योति" ने प्रजामंडल की शिक्षा प्रसार की गतिविधियों को व्यापक कवरेज दी। मई 1946 के अंक में पूनावाड़ा पाठशाला और शिवराम रोत की भूमिका का उल्लेख है, जबकि जून 1947 में रास्तापाल हत्याकांड को "शिक्षा के लिए बलिदान" के रूप में चित्रित किया गया। अखबार ने प्रजामंडल को "भील समुदाय का मसीहा" बताया।[9] "राजस्थान पत्रिका"[10] ने अप्रैल 1947 में प्रजामंडल की सभाओं को "शिक्षा क्रांति का प्रारंभ" करार दिया। जून 1947 में कार्यकर्ताओं की रिहाई को "प्रजामंडल की जीत" के रूप में प्रस्तुत किया गया।

4. प्रजामंडल की गतिविधियों का प्रभाव शिक्षा का प्रसार:

प्रजामंडल की पाठशालाओं ने भील समुदाय में साक्षरता और जागरूकता को बढ़ाया। रास्तापाल और पूनावाड़ा पाठशालाएं आज भी शिक्षा के लिए संघर्ष का प्रतीक हैं।प्रजामंडल के आंदोलनों और रास्तापाल हत्याकांड के बाद बढ़े जनाक्रोश ने महारावल लक्ष्मण सिंह को समझौते के लिए मजबूर किया। सामंती शासन का कमजोर हुआ, जिससे दिसंबर 1947 में राज्य प्रबंध कारिणी सभा की स्थापना और प्रजामंडल प्रतिनिधियों की भागीदारी इसका परिणाम थी।प्रजामंडल की गतिविधियों ने डूंगरपुर में प्रजातांत्रिक सुधारों की नींव रखी और शिक्षा को भील समुदाय के सामाजिक उत्थान का आधार बनाया। "प्रजामंडल ने डूंगरपुर में शिक्षा और स्वतंत्रता के लिए एक नया युग शुरू किया। रास्तापाल हत्याकांड के बाद महारावल लक्ष्मण सिंह ने समझौते की नीति अपनाई। दिसंबर 1947 में राज्य प्रबंध कारिणी सभा की स्थापना की गई, जिसमें प्रजामंडल प्रतिनिधियों को शामिल किया गया। कालीबाई और नाना भाई की स्मृति में रास्तापाल में एक पार्क और मूर्तियां स्थापित की गईं, जहां प्रतिवर्ष मेला आयोजित होता है।[11]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

शोध लेखन का उद्देश्य

वागड़ क्षेत्र में स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश शासन और देशी रियासती क्षेत्रों में भील समुदाय के शिक्षा के लिए संघर्ष को रेखांकित करना है।डूंगरपुर रियासत के सामंती शासन और प्रजामंडल आंदोलन के प्रभाव का विश्लेषण करना है।इस क्षेत्र में भील सुधारक गोविंद गुरु और भोगीलाल पंड्या जैसे स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका का मूल्यांकन करना है।इस क्षेत्र की बहु संख्यक जनसंख्या भील समुदाय अशिक्षा, बेगार प्रथा, अधिक भू-राजस्व कर इत्यादि प्रकार से शोषित और पीड़ित थी,तब क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों ने उनके हक अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए गांव - गांव पाठशालाओं को खोला गया। जहां क्षेत्र के भील शिक्षकों की नियुक्ति की गई, इनमें रास्ता पाल पाठशाला के शिक्षक नाना भाई खांट और शिष्या कालीबाई भील की शहादत के ऐतिहासिक महत्व को समझना है।इस क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार प्रचार के लिए यातनाएं,जेल और शहादतें दी गई, स्वतंत्रता के बाद वर्तमान समय क्षेत्र के विधार्थियों को शिक्षा के सार्वभौमिकता का लाभ लेने की आवश्यकता है।

शोध पद्धति

यह शोध पत्र ऐतिहासिक दस्तावेजों, ग्रंथों, और समकालीन स्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में डूंगरपुर रियासत के अभिलेख और प्रजामंडल से संबंधित दस्तावेज शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में इतिहासकारों द्वारा लिखित पुस्तकें और शोध पत्र, जैसे कि "राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम" और "वागड़ का इतिहास" शामिल हैं। कीवर्ड आधारित विश्लेषण के साथ तथ्यों को संदर्भित किया गया है।

निष्कर्ष

वागड़ क्षेत्र में शिक्षा के लिए भील समुदाय की शहादतें, विशेषकर नाना भाई खांट और कालीबाई का बलिदान, स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक जागरूकता का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। डूंगरपुर रियासत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रजामण्डल के माध्यम से स्व शासन में भागीदारी और मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए शिक्षा का प्रचार प्रसार किया गया। इनके कार्यों में रास्तापाल और पूनावाड़ा प्रमुख पाठशालाओं की स्थापना, शिक्षकों का प्रशिक्षण, और सामुदायिक जागरूकता अभियान इसके प्रमुख योगदान थे। गोविंद गुरु और भोगीलाल पंड्या जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने इस संघर्ष को दिशा दी, जबकि प्रजामंडल आंदोलन ने इसे संगठित रूप प्रदान किया। रास्तापाल हत्याकांड ने सामंती शासन की क्रूरता को उजागर किया। और शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। शहीद नाना भाई भील और कालीबाई की स्मृति में उनकी मूर्तियां को गैप सागर के सामने उन वीर शहादतों के नाम का पार्क स्थापित किया है। वहां प्रतिवर्ष 21 जून को शहीद मेलें का आयोजन किया जाता है। यह शोध पत्र वागड़ के भील

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

समुदाय के साहस और बलिदान को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। राजस्थान सरकार ने स्वतंत्रता पूर्व शिक्षा और शिक्षक के लिए बलिदान देने वाली काली बाई को "शिक्षा की देवी"कहा जाता है, वर्तमान में सम्पूर्ण राज्य की बालिकाओं को मान, सम्मान और स्वाभिमान के लिए शिक्षा की महत्ता को परिभाषित किया गया।

संदर्भ ग्रंथ :

1. शर्मा, आर.के. (2010). राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. पृ. 45.
2. वर्मा, एस.पी. (2015). वागड़ का इतिहास. उदयपुर: हिमांशु प्रकाशन. पृ. 78.
3. पंड्या, बी.एल. (2005). डूंगरपुर प्रजामंडल: एक अध्ययन. डूंगरपुर: वागड़ सेवा मंदिर. पृ. 112.
4. जैन, एम.के. (2018). राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी. दिल्ली: साहित्य अकादमी. पृ. 203.
5. पंड्या, बी.एल. (2005). डूंगरपुर प्रजामंडल: एक अध्ययन. डूंगरपुर: वागड़ सेवा मंदिर. पृ. 112.
6. सिंह, वी.पी. (2012). सामंती शासन और जनजागरण. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन. पृ. 89.
7. माथुर, पी. (2020). कालीबाई: वीर बाला की गाथा. जयपुर: राजस्थान साहित्य अकादमी. पृ. 56.
8. डूंगरपुर रियासत अभिलेख (1843-1949). भोपाल: राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत सरकार.
9. "प्रजामंडल की शिक्षा क्रांति". नवज्योति, जून 1946.
10. प्रजामंडल की सभाएं: शिक्षा क्रांति का प्रारंभ". राजस्थान पत्रिका, अप्रैल 1947.
11. गुप्ता, एन.के. (2019). वागड़ में प्रजामंडल आंदोलन. उदयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय. पृ. 121